|| लम्पी वायरस से कष्ट भुगत रही गौ माताओं की रक्षा का मंत्रात्मक दैवीय उपाय ||

मंत्र विनियोग :

"क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा" अस्य मंत्रस्य नारद ऋषिः , गायत्री छंदः , श्री कृष्ण देवता , क्लीं बीजं स्वाहा शक्ति : समस्त गौ संरक्षणार्थे गौ कष्टदायी महामारी उपद्रव शमनार्थे च श्री कृष्ण देवता प्रसन्नार्थे च जपे विनियोगः |

ऋषि आदि न्यास :

नारद ऋषये नमः शिरसि , गायत्री छन्दसे नमः मुखे , श्री कृष्ण देवताय हृदि , क्लीं बीजाय नमः गुह्ये , स्वाहा शक्तये नमः पादयो : , समस्त गौ संरक्षणार्थे गौ कष्टदायी महामारी उपद्रव शमनार्थे च श्री कृष्ण देवता प्रसन्नार्थे च जपे विनियोगाय नमः सर्वांगेषु !

कर न्यास :

क्लीं कृष्णाय अंगुष्ठाभ्यां नमः

गोविन्दाय तर्जनीभ्यां नमः

गोपीजन मध्यमाभ्यां नमः

वल्लभाय अनामिकाभ्यां नमः

स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां नमः

क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः

हृदय आदि न्यास :

क्लीं कृष्णाय हृदयाय नमः

गोविन्दाय शिरसे स्वाहा

गोपीजन शिखायै वषट्

वल्लभाय कवचाय हुं

स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट्

क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा अस्त्राय फट्

ध्यान :

स्मरेद् वृन्दावने रम्ये मोहयन्तम् मनोहरम्

गोविन्दम् पुण्डरीकाक्षम् गोपकन्याः सहस्त्रशः !!

(वृन्दावन में कल्पवृक्ष के नीचे निर्मित्त सुन्दर मणिपीठ पर, रक्तवर्ण के अष्टदल कमल पर विराजमान, पीताम्बरालंकृत, बादलोम के समान कान्ति वाली, अनेक आभूषणों को धारण किए हुये, गो, गोप एवं गोपियों से घिरे हुये, कामदेव से भी अधिक सुन्दर, मुनिगणों से संयुक्त वंशी बजाते हुये श्रीगोविन्द का स्मरण करना चाहिए |)

पूजन विधि : पूजा की चौकी पर भगवान श्री कृष्ण की मूर्ति रखकर उसके सामने अष्टदल बनाकर उस अष्टदल पर भगवान का तथा उनके अंग देवताओं का धुप , दीप, नैवैद्य से पूजन करें !

पूजन मंत्र :

आचक्राय स्वाहा, आग्नेये, विचक्राय स्वाहा नैऋत्ये,
सुचक्राय स्वाहा, वायव्ये, त्रैलोक्यरक्षणचक्राय स्वाहा, ऐशान्ये,
असुरान्तकाचक्राय स्वाहा, चतुर्दिक्षु ।
इसके बाद अष्टदल में पूर्वादि दलों के क्रम से अश्टमहिषियों की यथा –
ॐ रुक्मिण्यै नमः, पूर्वदले, ॐ सत्यभामायै नमः, आग्नेयदले,
ॐ नाग्नजित्यै नमः, दक्षिनदले, ॐ कालिन्द्यै नमः नैऋत्यदले,
ॐ मित्रविन्दायै नमः, पश्चिमदले, ॐ सुलक्षणायै नमः, वायव्यदले,
ॐ जाम्बवत्यै नमः, उत्तरदले, ॐ सुशीलायै नम्ह, ईशानदले
तपश्चात पूर्वादि दलों के अग्रभाग में वसुदेव आदि की पूजा करे । यथा –
ॐ वसुदेवाय नमः ॐ देवक्यै नमः, ॐ नन्दाय नमः,
ॐ यशोदायै नमः ॐ बलभद्रायै नमः, ॐ सुभद्रायै नमः,
ॐ गोपेभ्यो नमः, ॐ गोपीभ्यो नमः

पूजन उपरान्त तुलसी माला पर भगवान कृष्ण के उपरोक्त 18 अक्षरी श्री कृष्ण मन्त्र का जप आरम्भ करें ! जप के उपरांत जप को भगवान को समर्पित कर दें और हाथ जोड़कर प्रार्थना करें कि, हे कृष्ण ! हे गोविन्द ! गौ माताओं की रक्षा करें ! महामारी के रोग से गौ माताओं की रक्षा करें !
प्रणाम कर आसन से उठें !

प्रसाद बच्चों को बाँट दें !

इस प्रकार इस मंत्र का एक लाख जप करें ! 100 माला नित्य 10 दिन तक और 11 वें दिन शुद्ध गाय के घी से बनाई खीर और घी की 10 हजार आहुति से गौशाला में दशांश हवन करें ! उसके उपरान्त 1 हजार तर्पण करें और 100 जप से मार्जन करें और 11 कन्या और 11 बालकों को सात्विक भोजन कराएं ! विधि समझ न आयें तो इस युट्यूब लिंक पर विडियो देखें :

https://youtu.be/Z8KuQxwkhGw

शारदा तिलक तंत्र ग्रन्थ में इस मंत्र की महिमा में कहा गया है कि,

गोशालासु कृतो होमः पायसेन ससर्पिषा !

गवां शान्तिं करोत्याशु गोविन्दो गोकुलप्रियः !!

- घृत युक्त खीर से गोशाला में होम करने से गोकुल प्रिय गोविन्द बहुत शीघ्र ही गायों पर आनेवालें उपद्रवों को शांत करते है ! (शारदा तिलक तंत्र 17 / ९८ – ९९)
-
- इस प्रकार के दैवीय उपाय से गौ माता पर आये संकट का निवारण हो सकता है ! एक गौशाला हेतु 1 लाख जप , एक जनपद के लिए 18 लाख जप करना चाहिए ! यदि यह मंत्र समस्त भारतवर्ष की गौ माताओं का कष्ट निवारण करने हेतु करना है तो मन्त्र विशेषज्ञ आचार्य के मार्गदर्शन में इस मंत्र का 18 करोड़ जप एवं दशांश हवन करना चाहिए !
-
- आगामी नवरात्रि में स्वामी रुपेश्वरानंद आश्रम में गौ माता के कष्ट निवारण हेतु यह यज्ञ संपन्न किया जायेगा !

निवेदन एवं मार्गदर्शन :

स्वामी रुपेश्वरानंद आश्रम

बलुआ , चंदौली – वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

W/No. 7607233230

E-mail_ swamirupeshwar@gmail.com

Web- https://swamirupeshwaranand.in/

नारायण ! नारायण !! नारायण !!!!